बदल गया बुधिया...

कहानी जगदीशपुर गाँव के
आदर्श गाँव बनने की...

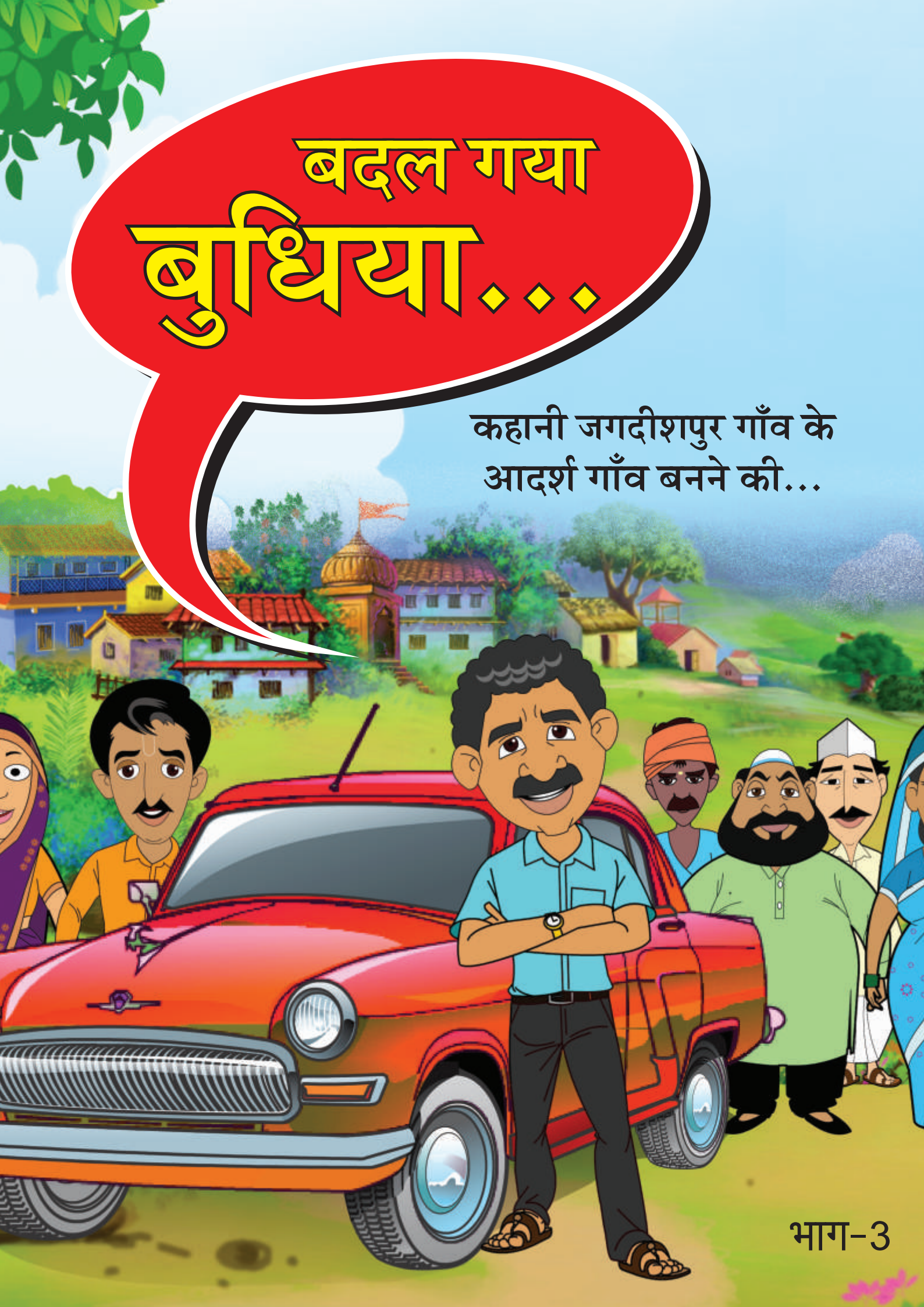

भाग-3

अभी तक आपने पढ़ा कि किस तरह से जगदीशपुर गाँव में कई वर्षों से चली आ रही अज्ञानता और रुढ़िवादिता को उसी गाँव के एक नौजवान युवक समीर ने खत्म करने का बीड़ा उठाया। उसने गाँव में रहने वाले बुधिया, नन्हें, पार्वती, मिसरी तथा अन्य गाँव वालों को परमाणु ऊर्जा से जुड़ी तमाम भ्रांतियों और गलतफहमियों को समाप्त करने के लिये राजस्थान परमाणु बिजली घर की सैर करायी। राजस्थान परमाणु बिजली घर में सैर करने के बाद बुधिया, नन्हें, पार्वती और मिसरी के मन में परमाणु बिजली घर और परमाणु ऊर्जा को लेकर जितने भी शक और सवाल थे वो काफी हद तक कम हो गये। बिजली घर की सैर करने के बाद उनके अंदर काफी उत्साह और जोश की भावना जाग्रत हो गयी और उनके मन में भी अपने गाँव के विकास की तस्वीर घूमने लगी।

तो आइये देखते हैं कि क्या जगदीशपुर गाँव भी बदल सका? क्या वहाँ भी खुशहाली और तरक्की कायम हो सकी और अंत में क्या बुधिया और उसके अन्य गाँव वाले साथी बदल सके?

आइये मज़ा लेते हैं इस अनोखे बदलाव का...

राजस्थान परमाणु बिज़ली घर की सैर करने के बाद अगले दिन सभी गाँव वाले समीर के साथ मुखिया जी के घर पहुँचते हैं...

अरे राम राम। राम राम। आओ आओ, बैठो, बैठो... क्यों भाई, कैसी रही यात्रा? कैसा लगा परमाणु बिजली घर की सैर करके? तुम सबके चेहरे की खुशी बता रही है कि तुम सब को काफी मज़ा आया... क्यों बुधिया?

जी हाँ मुखियाजी, ये सब समीर बेटा के कारण हो सका... अगर ये हमें वहाँ की सैर नहीं करवाता तो हम परमाणु ऊर्जा से होने वाले फायदे को कभी नही जान पाते...

बिल्कुल... परमाणु बिज़ली घर के आस-पास का शुध्द हरा भरा वातावरण इतना सुंदर था कि हम सब तो वहाँ से आना ही नहीं चाहते थे...

जी मुखियाजी... और विकास क्या होता है? गाँव की तरक्की कैसे होती है? गाँव के लोगों का रहन-सहन कैसे बदलता है? ये तो हम कभी जान ही नहीं पाते... समीर बेटे की वजह से हम सभी को ये सब देखने का मौका मिला...

अरे नहीं काकी... धन्यवाद तो मुझे आप सबका देना चाहिये जो इतने खुले विचार और मन से मेरी बातों को सुन कर बिजली घर की सैर के लिये तैयार हुये...

सच मानिये... आप लोगों से ज्यादा खुशी तो आज मुझे है... अब बताइये, क्या आप सब अब अपने गाँव की खुशहाली और तरक्की के लिये तैयार हैं?

हाँ, हाँ... हम सब तैयार हैं...

तो क्या हमाले गांव में भी पलमालु बिदली घल लदेगा...?

बिल्कुल... सब के सब अब कमर कस के तैयार हो जाओ... (हा हा हा...) पर समीर बेटा, ये सब होगा कैसे?

हाँ..हाँ...
ये सब होगा कैसे?

वो सब आप मुझ पर छोड़ दीजिये दादाजी... पिछले वर्ष सरकार ने जगदीशपुर गाँव के आस-पास की ज़मीन पर परमाणु बिजली घर को बनाने का फैसला किया था। यहाँ की ज़मीन परमाणु बिजली घर लगाने के हिसाब से काफी उपयुक्त है... अब तो बस हमें वहाँ के अधिकारियों के आने का इंतज़ार करना होगा...

तो क्या तब तक कुछ
भी नहीं होगा?

अरे नहीं काका... मैं परमाणु बिजली घर के अधिकारियों से बात करुँगा और अपने गाँव में आने को कहूँगा... पर इसमें थोड़ा वक्त तो लगेगा... आप सब लोग खुशी से रहिये... मैं कल शहर जाता हूँ और कुछ दिनों के बाद लौटूँगा... तब तक के लिये आप सबको मेरा प्रणाम।

जुग-जुग
जियो बेटा...

अच्छा दादाजी... अब मैं चलता हूँ... जल्द ही आप सब लोगों से फिर मुलाकात होगी...

जीते रहो बेटा... (इसके बाद समीर वापस अपने शहर लौट जाता है और सभी गाँव वाले भी अपने-अपने घरों में, भविष्य के सपने संजोये लौट जाते हैं...

और फिर कुछ दिन बाद...
ट्रिन-ट्रिन...ट्रिन-ट्रिन...
ट्रिन...ट्रिन...ट्रिन...

अरे भाई कौन है?
जो इतनी सुबह-सुबह फोन
कर रहा है। हेलो...

हेलो। दादाजी... प्रणाम। मैं समीर बोल रहा हूँ... कैसे हैं आप?

अरे समीर बेटा... जुग-जुग जियो...
मैं बिल्कुल ठीक हूँ... और बताओ शहर में सब
कुछ कैसा चल रहा है?

सब बढ़िया है दादाजी। आपको बस खुशखबरी देनी है। मैंने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास कर ली है और एक बड़ी सी कम्पनी में मेरी नौकरी भी लग गयी है...

अरे वाह। ये तो बहुत ही
खुशी की बात है... तुम्हारे माँ-
बाप यदि आज जीवित होते तो
कितना खुश होते...

दादाजी। आप मेरे लिये माँ-बाप से बढ़ कर हैं... और हाँ एक बात और... अगले हफ्ते गाँव में परमाणु ऊर्जा विभाग के अधिकारी परमाणु बिजली घर के लिये मुआयना करने आने वाले हैं... आप सब तैयार रहियेगा... हो सकेगा तो मैं भी आ जाऊँगा...

एक हफ्ते बाद... गाँव में चौपाल लगी होती है और सब लोग आपस में बैठ कर विचार-विमर्श कर रहे होते हैं... तभी अचानक से 3-4 गाड़ियाँ आकर वहाँ पर रुकती हैं...

अरे वाह। ये तो और भी अच्छी बात बतायी तुमने। मैं अभी सभी गाँव वालों को बताता हूँ... अच्छा दादाजी, अब मैं फोन रखता हूँ... आने पर बात होगी... प्रणाम दादाजी... जीते रहो बेटा... जीते रहो...

जी नमस्कार। हम सभी लोग परमाणु ऊर्जा विभाग की तरफ से यहाँ पर आये हैं, सरकार ने आपके गाँव के आसपास की ज़मीन पर परमाणु बिजली घर लगाने का फैसला किया है... इसी सिलसिले में हम सभी लोग आपके पास आये हैं...

अरे, अरे।ओह। आइये आइये सर... जगदीपुर गाँव में आप सभी का हार्दिक स्वागत है... अरे भाई, कुर्सियाँ ले आओ... (सभी लोग कुर्सियों पर बैठ जाते हैं...)

जी सर। बताइये हम सब गाँव वाले आपकी क्या मदद कर सकते हैं?

देखिये मेरा नाम जीवन कुमार है, और ये हैं मेरे साथी, प्रमोद, सावरकर, किशोर और नवीन...

देखिये मुखियाजी। कई वर्षों के अध्ययन के परिणाम स्वरुप आपके गाँव के आस पास के क्षेत्र को परमाणु बिजली घर लगाने के हिसाब से काफी उपयुक्त माना गया है... भौगोलिक दृष्टिकोण से, ये स्थान भूकंप और सुनामी की स्थिति में बिल्कुल ही सुरक्षित है और साथ ही यहाँ की ज़मीन के कम उपजाऊ होने के कारण आपके व्यवसाय पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा... जिन लोगों की ज़मीन सरकार परमाणु बिजली घर लगाने के लिये लेगी... उसे उचित मात्रा में मुआवजा भी मिलेगा...

और हाँ... मुखियाजी... परमाणु बिजली घर लगने के साथ-साथ आपके गाँव का भी विकास होगा... पक्की सड़के, नालियाँ, पीने के पानी की समुचित व्यवस्था, शौचालयों का निर्माण भी किया जायेगा... जिससे आपका जीवन बेहतर बन सकेगा...

जी हाँ। और तो और, आप के गाँव में जो युवक पढ़े-लिखे होने के बावजूद बेरोज़गार हैं, उनके लिये भी रोज़गार के काफी अवसर उपलब्ध होंगे और उन्हें उनकी योग्यता के हिसाब से नौकरियों में प्राथमिकता भी दी जायेगी।

साथ ही आपके गाँव और आस-पास के तमाम गाँवों में पर्याप्त मात्रा में बिजली मिलेगी जिससे आपके खेतों में सिंचाई के लिये ट्यूबवेल का इस्तेमाल हो सकेगा और आपकी पैदावार भी खूब बढ़ जायेगी...

जी हाँ, साथ ही बच्चों के लिये स्कूल और इलाज के लिये अस्पतालों का भी निर्माण होगा, जिससे आप सब लोगों को पढ़ाई और इलाज के लिये शहर नहीं जाना पड़ेगा...

बस हमें आप सब लोगों का साथ चाहिये ताकि हम जल्द से जल्द अपना काम शुरु कर सकें...

ये तो हमारे लिये बहुत ही सौभाग्य की बात है... हम सब गाँव वाले आप के साथ हैं, आप जितनी जल्दी हो सके, काम शुरु कर दीजिये... हमारी तरफ से आपको पूरा सहयोग मिलेगा... और हाँ, अगली बार मैं आप को अपने पोते समीर से भी मिलवाऊँगा...
अरे हाँ। समीर। याद आया... उन्होंने ही तो हमें आप सब को मिलने के लिये कहा था... मैं तो भूल ही गया...
चलिये अगली बार उन से भी मुलाकात होगी... अब हम लोग चलते हैं और आप से फिर मुलाकात होगी... नमस्कार... (इसके बाद सब लोगों के जाने के बाद मुखिया और गाँववाले सलाह मशवरा करते हैं...)
कुछ दिन बाद... गाँव में मुखिया के घर सब लोग बैठे होते हैं... गाँव में फिर से 2-3 गाड़ियाँ रुकती हैं और उस में से कुछ लोग उतरते हैं... और मुखिया के घर पहुँचते हैं...
नमस्कार मुखियाजी... कैसे हैं?
अरे आइये सर। आपका स्वागत है। हम सब लोग अच्छे हैं।
मुखियाजी। ये हमारे साथ तहसीलदार साहब आये हैं जो आप सब लोगों से अपनी-अपनी ज़मीन का ब्यौरा लेने आये हैं... आप सब लोगों से अनुरोध है कि आप के पास जितनी भी ज़मीन है उसका ब्यौरा यहाँ पर लिखवा दीजिये...
ठीक है... मुझे कुछ समय दीजिये। मैं सबको यहाँ पर बुलाता हूँ, फिर आप सब लोगों से उन का ब्यौरा ले लीजियेगा...

ठीक है मुखिया जी...
इसके बाद, सभी गाँव वाले मुखिया जी के घर एकत्रित होते हैं और तहसीलदार को सारी ज़मीन का ब्यौरा देते हैं...
मुखिया: लीजिये तहसीलदार साहब। आपका काम तो हो गया...
धन्यवाद मुखिया जी।
अच्छा मुखिया जी, अब हम सब चलते हैं और कुछ समय के बाद मिलेंगे... हमें दूसरे गाँवों मे भी जा कर इसी तरह का कार्य करना पड़ेगा... आप से लगभग एक महीने बाद मुलाकात होगी...
नमस्कार।
एक महीना बीत जाता है और उसके बाद गाँव में बहुत से अधिकारी आते हैं और वो सब मुखिया के घर की तरफ जाते हैं...
नमस्कार मुखिया जी... कैसे हैं आप...?
नमस्कार सर। आइये, आइये। बड़ी खुशी हुयी। बताइये क्या कर सकते हैं हम आप के लिये...

मुखियाजी... हमने आप के गाँव के लोगों की ज़मीन का पूरा ब्यौरा इकट्ठा कर लिया है और उसके हिसाब से आप सभी लोगों का मुआवज़ा भी निर्धारित हो गया है। अब हम आप को ज़मीन के बदले उचित मुआवजा देंगे, ताकि जल्द से जल्द कानूनी प्रक्रिया खत्म हो सके और यहाँ पर काम चालू किया जा सके।

अरे वाह। ये तो बड़ी अच्छी बात है। आप जो भी, जैसे भी करना चाहें, हम लोग तैयार हैं...

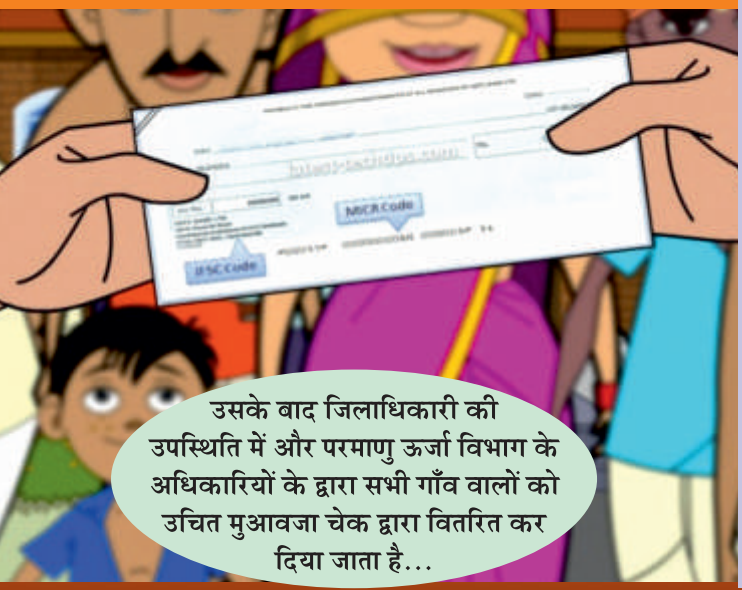

उसके बाद जिलाधिकारी की उपस्थिति में और परमाणु ऊर्जा विभाग के अधिकारियों के द्वारा सभी गाँव वालों को उचित मुआवजा चेक द्वारा वितरित कर दिया जाता है...

मुखियाजी। हम परमाणुऊर्जा विभाग की ओर से आपका और आपके गाँववालों का बहुत ही शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने बहुत ही समझदारी से काम लिया और सरकारी काम में मदद की। मैं आप सब को बधाई देता हूँ...

कुछ ही दिनों में हम अपना काम शुरु कर देंगे... आप सभी गाँव वालों से गुज़ारिश है कि आप सब उद्घाटन के समय साईट पर ज़रुर आयें ताकि आप सब भी देश की तरक्की में भागीदार बन सकें।

क्यों नहीं सर। हम सब ज़रुर आयेंगे।
क्यों बुधिया, क्या कहते हो?

जी हाँ, मुखिया जी। हम सब के लिये ये तो बड़े गर्व की बात है... हम सब जरुर उपस्थित होंगे... लोगों को मुआवज़ा देने के बाद सभी अधिकारी वहाँ से चले जाते हैं और कुछ दिनों के बाद साइट पर कार्य शुरु हो जाता है...

साइट का दृश्य: (सभी लोग अधिकारी, मजदूर, गाँव वाले, बड़ी-बड़ी क्रेन, ईंट, पत्थर, बालू, मोरंग, सरिया इत्यादि...)

आइये, आइये। आप सब लोगों का निर्माण स्थल पर स्वागत है। मुखियाजी, मेरी ये इच्छा है कि इस निर्माण स्थल का पहला पत्थर आप लोगों द्वारा लगाया जाये...

अरे सर। ये तो हमारे लिये बड़ी सौभाग्य की बात होगी... लो बुधिया हम सब गाँव वालों की तरफ से पहला पत्थर तुम रखो...

अरे मैं... नहीं नहीं... मुझ से नहीं होगा...

अरे काका। घबराइये नहीं... कुछ नहीं होगा... ये तो आपके लिये खुशी व गर्व की बात होगी...

समीर की बातें सुनकर बुधिया मान जाता है और जैसे ही वो पत्थर लगाने के लिये जाता है तभी उसे ज़ोर की आवाज सुनायी पड़ती है... रुक जाओ, बंद करो ये काम। कोई काम नहीं होगा। चले जाइये आप सब यहाँ से...

अरे नत्थू। लाखन। डमरु। तुम सब के सब अचानक। आज शिकारपुर से अचानक कैसे आना हुआ और ये क्या शोर मचा रखा है?...

बुधिया भैया। ये ठीक नहीं हो रहा है। हम यहाँ परमाणु बिजली घर नहीं लगने देंगे...

हाँ बुधिया। चाहे हमारी जान ही क्यों नहीं चली जाये... यहाँ पर कोई बिजली घर नहीं लगेगा...

हाँ हाँ, यहाँ बिजली घर बनेगा तो हमारे खेत-खलियान, हमारे घरों में, हर तरफ विकिरण पहुँचेगा और हम कैंसर और विकिरण के कारण होने वाले अन्य रोगों से मर जायेंगे...

हाँ, हाँ, हम सब मर जायेंगे... कोई काम नहीं होगा... चले जाइये सब के सब...

अरे भाइयों, शांत हो जाइये... ऐसा कुछ भी नहीं होगा... ये सब आप लोगों का अंधविश्वास है...

तभी परमाणु ऊर्जा के प्रति वैचारिक मतभेद रखने वाले आदमी ने आगे बढ़कर मुखिया को डाँट लगायी

चुप हो जाओ मुखिया। मैं भी इस इलाके का निवासी हूँ... तुम्हें क्या पता इन सब के बारे में... तुम सब अनपढ़, गँवार जाहिल हो, तुम क्या जानो इन सब चीज़ों को... तुम्हें पता है कि परमाणु बिजलीघर से निकलने वाला विकिरण कितना हानिकारक होता है?

इसके बाद कुछ समाज सेवी संगठनों के लोग भी आगे आ जाते हैं

ये बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, हमें कोई बिजली नहीं चाहिये... पूरा इलाका विकिरण से तबाह हो जायेगा... हम सब इसका घोर विरोध करेंगे... क्यों भाइयों...

हाँ-हाँ, क्यों नहीं... चाहे जो भी हो जाये... हम यहाँ बिजली घर नहीं लगने देंगे... हम कल से ही यहाँ पर धरने पर बैठेंगे...

शांत हो जाइये... ध्यान से सुनिये मेरी बात। कृपया सब लोग शांति बनाये रखिये...

दोस्तों आप सब लोगों की बातों को सुनकर ऐसा लग रहा है कि आप को इन्होंने और समाज सेवी संगठनों ने सही बात नहीं बतायी है... इसीलिये आज आप उनकी बातों में आकर यहाँ पर विरोध करने चले आये हैं। मैं आप से पूछता हूँ लाखन चाचा... कितना जानते हैं आप विकिरण के बारे में?

नत्थू काका, आप को क्या पता है कि परमाणु बिजली घर लगने से क्या नुकसान होता है ?

और डमरु तुम... पढ़ाई-लिखाई छोड़कर तुम इन लोगों के साथ विरोध करने निकले हो... तुम तो विज्ञान के विद्यार्थी हो... तुम्हारे मुँह से ये सब सुन कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा है।

हाँ-हाँ, ये लोग बिजली घर नहीं चाहते... तुम इनके रास्ते में मत आओ...

चुप हो जा ओ लड़के। तुम्हारी बातों में कोई नहीं आने वाला... चले जाओ यहाँ से...

आप लोग कौन होते हैं इनका भला-बुरा चाहने वाले? ये हमारा और इनका गाँव है। ये इनको फैसला लेने दीजिये कि क्या सही है, क्या ग़लत है? इतने सालों से हम सभी गाँव वाले आप जैसे लोगों के बहकावे में आकर तरक्की की राह में रोड़ा बनते हैं... आज इसी का नतीजा है कि हम सब इतने पिछड़े हैं...

और लाखन चाचा... आप विरोध कर रहे हैं... क्या आप को मालूम नहीं है कि पिछले साल चाची का कैंसर का इलाज इसी विकिरण की मदद से शहर में हुआ था... आज चाची विकिरण की ही मदद से पूरी तरह से स्वस्थ हो कर नयी जिंदगी जी रही हैं...

और नत्थू काका, अगर X-Ray मशीन नहीं होती तो पिछले दो वर्ष पहले आपके पैर की हड्डी टूटने का पता नहीं चलता... ज़रा सोचिये... यदि आप का इलाज सही वक्त पर नहीं होता तो क्या आप आज यहाँ पर खड़े हो पाते?

हमारे गाँवों में हजारों लोग आज भी ऐसे हैं जिनका सही समय पर इलाज न हो पाने के कारण वो लोग

गाँव में ही दम तोड़ देते हैं... हजारों बच्चे गाँव में ही अच्छी शिक्षा नहीं होने के कारण अनपढ़ रह जाते हैं और जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते हैं...

आज भी हमारे गाँवों में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण हजारों लोग डायरिया जैसी गंभीर बीमारियों के चपेट में आ जाते हैं... और अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं.... आज भी गाँव में पक्की सड़कों और नालियों के अभाव में बरसात का पानी हमारे घरों में घुस जाता है और तमाम प्रकार की बीमारियाँ, जैसे हैज़ा, मलेरिया इत्यादि के फैलने से सैंकड़ों लोगों की मृत्यु तक हो जाती है...

आज तक इन सब चीजों पर किसी का ध्यान नहीं गया है... हम सब पिछले 60-65 सालों से इसी मानसिकता का शिकार हो रहे हैं... जब भी गाँव में विकास की बातें होती हैं... जब भी कोई रोशनी की एक किरण दिखायी देती है... आप जैसे लोग और समाजसेवी संगठन अपना बसेरा वहीं बना लेते हैं और लोगों को गुमराह करते हैं...

मैं आप से पूछता हूँ कि क्या मिला है आप सब को इन कई सालों में... जरा देखिये अपने आप को... कैसी हालत है आप सब की... गाँवों मे बिजली नहीं है... बच्चे पढ़ लिख नहीं पाते हैं... रात में खाना नहीं बन पाता है... खेतों में फसलों की सिंचाई नहीं हो पाती है... गरीबी के कारण आप सब अच्छे बीज ओर वैज्ञानिक संसाधनों को खरीद नहीं पाते हैं... क्या यही विकास चाहते हैं आप?... क्या ऐसे ही सपने संजोये हैं आपने अपने बच्चों के लिये... आज, जब कोई सामने से खुद चलकर आप लोगों की तरक्की के बारे में सोचकर कुछ करने की चाह लिये यहाँ आया है, आप सब लोग खड़े हो गये विरोध के लिये...

क्या मिलेगा आप सब को इनका विराध कर के... जरा अपने बच्चों के भविष्य के बारे में तो सोचिये... आज पूरी दुनिया चाँद पर घर बसाने की सोच रही है और हम जगदीशपुर और शिकारपुर के लोग धरती पर भी अच्छा जीवन नहीं बिता पा रहे है? क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि इसके पीछे हम सब खुद ही ज़िम्मेदार हैं?

चुप हो जाओ बच्चे। बहुत देखे हैं तुम्हारे जैसे... तुम्हारी इन कोरी दलीलों से कुछ नहीं होगा। हम इस गाँव का विकास करेंगे। गाँव की खुशहाली और तरक्की का हम वादा करते हैं...

जनता वादा नहीं, काम चाहती है। केवल वादों से ही दुनिया अगर चलती तो क्या बात थी। मैं आप से पूछता हूँ कि क्या किया आप लोगों ने पिछले 60-65 सालों में... हर बार आप वादा करते हैं और हर बार आप लोगों को गुमराह कर के तरक्की की राह में रोड़ा अटकाते हैं...

और ये आप ही हैं ना जिसने दो वर्ष पहले एक बहुत बड़े उद्योगपति द्वारा यहाँ पर एक कपड़ा फैक्ट्री लगाने का विरोध किया था। उस समय भी आपने अपने लद्दछेदार

भाषणों से जनता को गुमराह किया था। आज अगर वो फैक्ट्री लग गयी होती तो कितने सारे लोगों को रोज़गार मिल जाता। आज हम सभी गाँव वालों का जीवन स्तर उठ गया होता... आप सब के विरोध के कारण वो फैक्ट्री आज दूसरे गाँव में लग गयी... जाकर देखिये उस गाँव का क्या हाल है? पूरे गाँव की तकदीर ही बदल गयी है...

इसलिये आपके मुँह से तरक्की और विकास की बात अब शोभा नहीं देती... आज गाँव वाले जाग गये हैं... हर बार आप हम सब को बेवकूफ नहीं बना सकते हैं।

अच्छा होगा आप और आपके चमचे इन समाज सेवी संगठनों के साथ यहाँ से चले जायें... वरना अच्छा नहीं होगा... क्यों भाईयों... हाँ...हाँ...हाँ...हाँ... आप सब चले जाइये...
(इसके बाद लोगों का गुस्सा देखकर परमाणु ऊर्जा के प्रति वैचारिक मतभेद रखने वाले लोग और समाज सेवी संगठनों के लोग वहाँ से धीरे-धीरे निकल जाते हैं...)
और लाखन चाचा, मैं आप को एक बात और बता दूँ कि परमाणु बिजली घर से कोई विकिरण नहीं निकलता है, इस से बनने वाली बिजली काफी किफायती और स्वच्छ होती है। इसके अलावा आस-पास का वातावरण भी काफी सुंदर और स्वच्छ होता है... ये बात मैं यू ही नहीं कह रहा हूँ... हम सब अभी कुछ दिनों पहले ही राजस्थान परमाणु बिजली घर की सैर करके लौटे हैं... और सब कुछ अपनी आँखों से देखा है... इसलिये आप सब बिल्कुल निश्चिंत रहिये... सब कुछ बढ़िया होगा। क्यों बुधिया काका।
हाँ लाखन। समीर बिल्कुल ठीक कह रहा है... कुछ महीने पहले हम सब भी तुम्हारी और अन्य गाँववालों की ही तरह अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण ऐसी ही बातें करते थे। वो तो भला हो समीर बेटे का जिसने हम सब की आँखें खोल दी...

सही कहा बुधिया तुमने। हर गाँव में समीर जैसा बेटा होना बहुत ही जरूरी है जो हम सब की आँखों पर बंधी पट्टी खोल सके। शाबास बेटा... जुग जुग जियो... उसके बाद शिकारपुर गाँव के सभी लोग वहाँ से चले जाते हैं...

भई मान गये समीर आपको। कितनी अच्छी तरह से आपने इस परेशानी का सही रास्ता निकाला। वास्तव में आप बधाई के पात्र हैं...

चलिये बुधिया जी, ईंट का पत्थर रखिये...

इस के बाद बुधिया ईंट का पत्थर रखता है और सब लोग ताली बजाते हैं और एक दूसरे को मिठाई खिला कर धन्यवाद देते हैं... और फिर कुछ वर्षों में परमाणु बिजली घर धीरे-धीरे बनकर तैयार होता है...

एक
वर्ष बाद...

दो
वर्ष बाद...

तीन
वर्ष बाद...

12.png
12.png

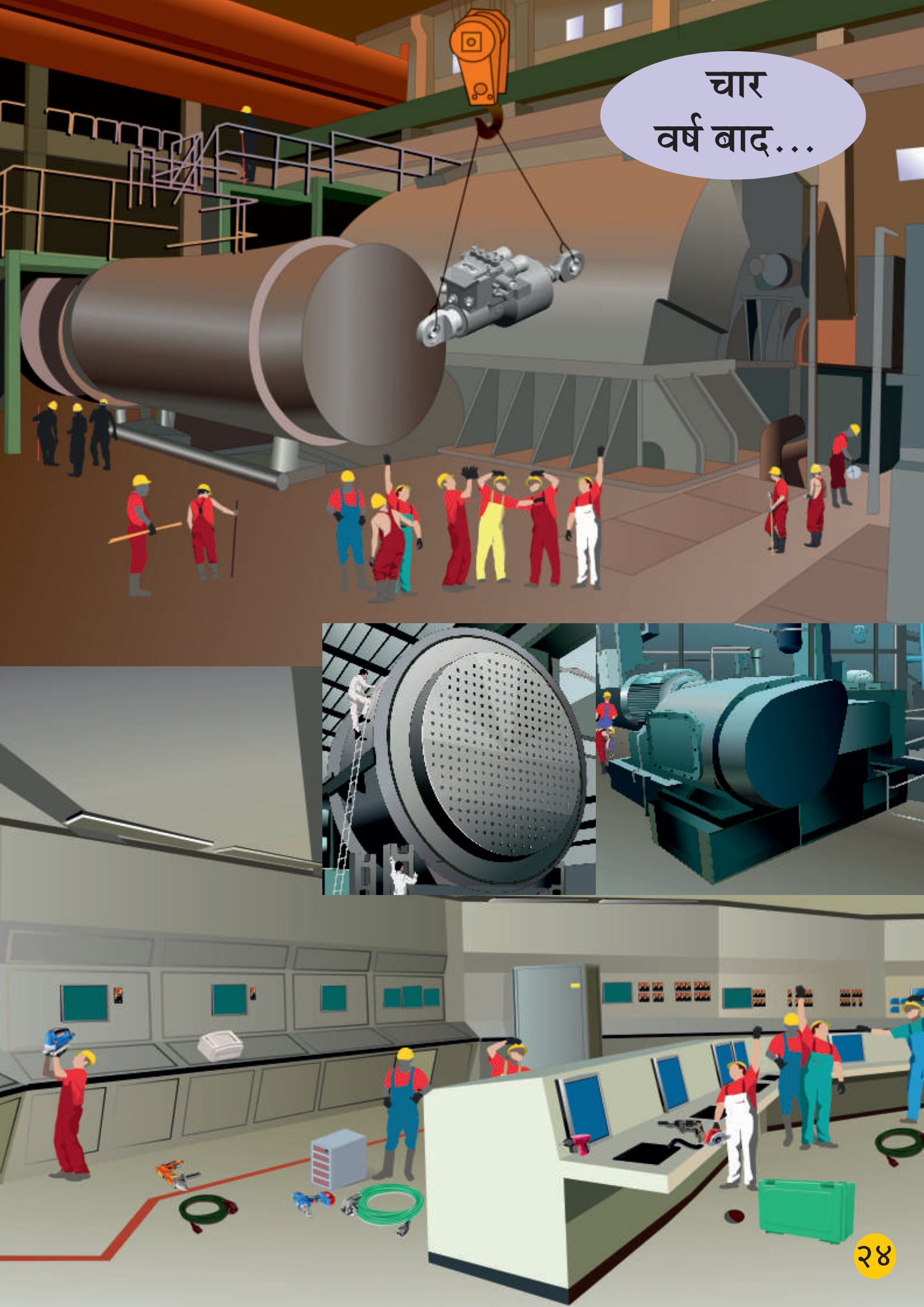
चार
वर्ष बाद...

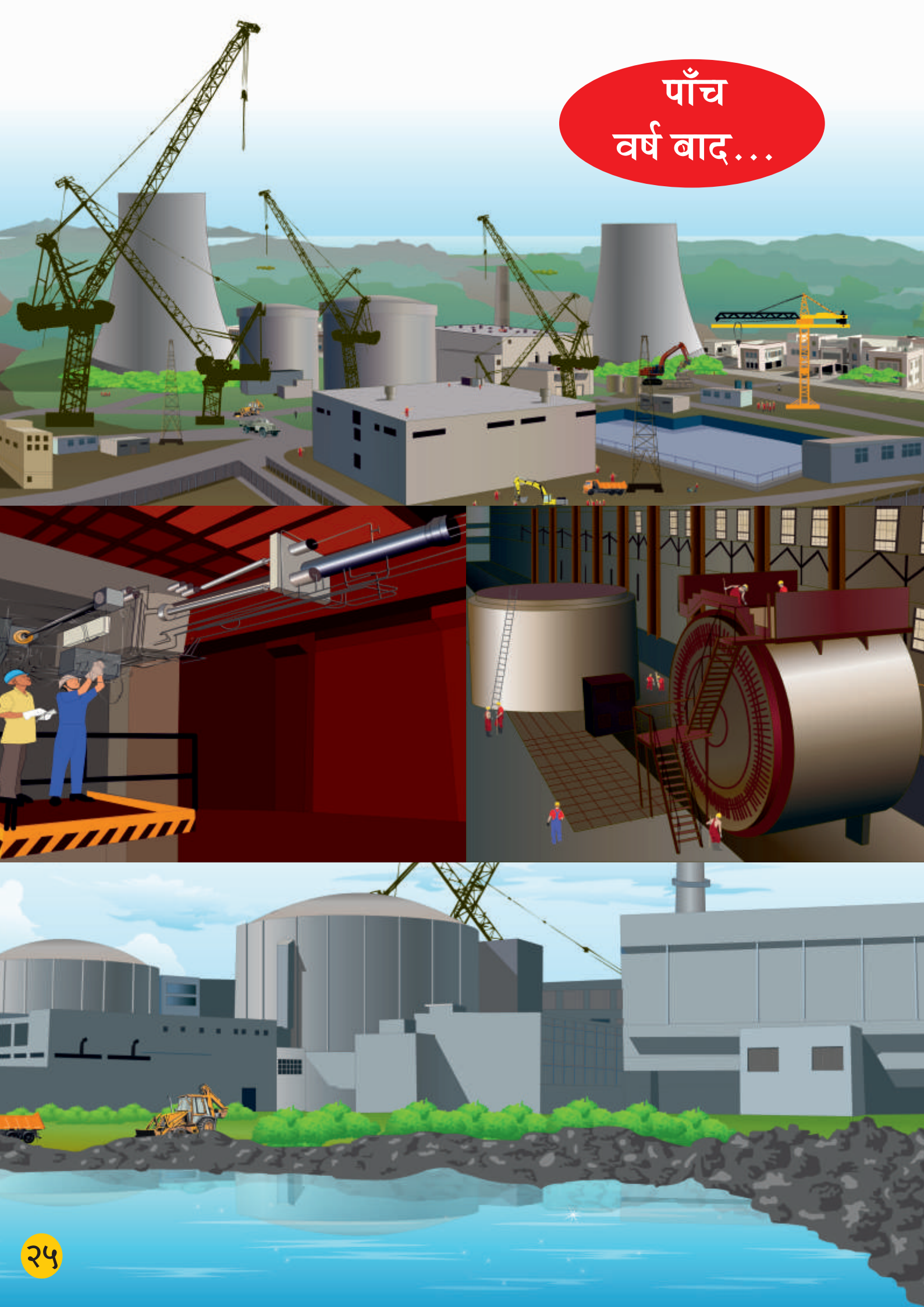
पाँच
वर्ष बाद...

और इस के बाद पाँच वर्षों में जगदीशपुर गाँव में परमाणु बिजलीघर बन के तैयार हो जाता है... और उद्घाटन का दिन भी आ जाता है... सारे गाँव वाले उस दिन उद्घाटन समारोह में पहुँचते हैं...

और फिर...

जगदीशपुर परमाण

बिजली घर

आप सभी गाँव वालों का हार्दिक स्वागत है। ये सब आपकी सूझ-बूझ और समझदारी का ही नतीजा है जो इस गाँव में तमाम विरोध के बावजूद भी परमाणु बिजली घर का निर्माण हो सका। आप सब इसके लिये बधाई के पात्र हैं, खास तौर पर समीरजी।

अरे ये तो हमारे लिये अत्यंत खुशी की बात है कि परमाणु बिजली घर बन जाने से गाँव में तरक्की और खुशहाली हो जायेगी। हमारे गाँव में भी हर समय बिजली उपलब्ध हो सकेगी। हम सब इसके लिये आप सब लोगों के बड़े ही आभारी हैं।

(इसके बाद गाँव में मुखिया के हाथों से फीता कटता है और सब लोग काफी खुश हो कर परमाणु बिजली घर के अंदर प्रवेश कर जाते हैं...

जगदीशपुर परमाणु बिजली घर

और इसके बाद एक दिन गाँव में भी निर्माण कार्य शुरु हो जाता है तथा 2 वर्ष के भीतर-भीतर जगदीशपुर गाँव पूरी तरह से बदल जाता है।

स्कूल का
निर्माण...
जगदीशपुर विद्यालय

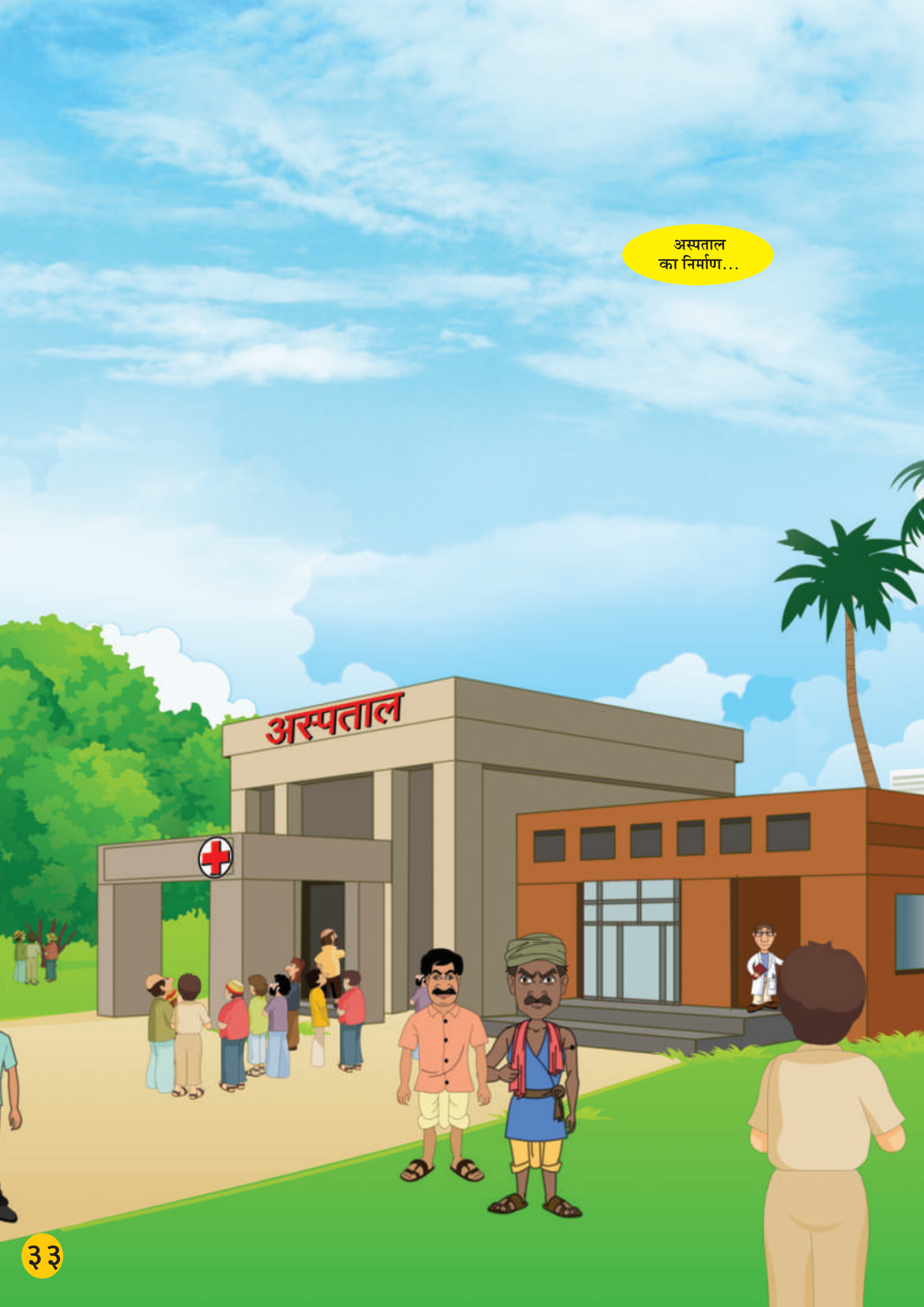
अस्पताल का निर्माण...
अस्पताल

और एक दिन...
पिताजी, मेरी परमाणु बिजली घर में नौकरी लग गयी है।
क्या? क्या कह रहे हो बेटा? ... ये तो बहुत ही खुशी की बात है। मैं अभी चला सब को बताने...
(इसी तरह से धीरे-धीरे काफी लोगों को उनकी योग्यता के अनुसार जगदीशपुर बिज़लीघर में नौकरी मिल जाती है...)

और कुछ वर्षों में सब तरफ से उस गाँव में खुशहाली छा जाती है और गाँव वालों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता हैं...सब लोगों मे इस तरक्की और विकास को देखकर खुशी के आँसू छलक जाते हैं... सबका जीवन स्तर सुधर जाता है...

और फिर अंत में...

कुछ साल बाद...

वाह बुधिया काका। आप तो बिल्कुल ही बदल गये... अरे वाह, नया पैंट, नयी शर्ट, मोटर गाड़ी... वाह क्या ठाठ हैं...

वाह मिसरी काकी, आपका मकान तो छप्पर का होता था न... कैसा चमक रहा है आज, क्या बात है? क्यों पार्वती काकी, अब इसी गाँव में रहने में कैसा मज़ा आ रहा है...

क्यों नन्हें काका... आप खुश तो हैं...

बेटा वास्तव में तुमने तो कमाल कर दिया... सभी गाँव वालों को तुमने विकास का जो मंत्र दिया है उसे हम कभी भूल नहीं सकते... तुम्हें कोटि-कोटि धन्यवाद, जुग-जुग जीयो बेटा।

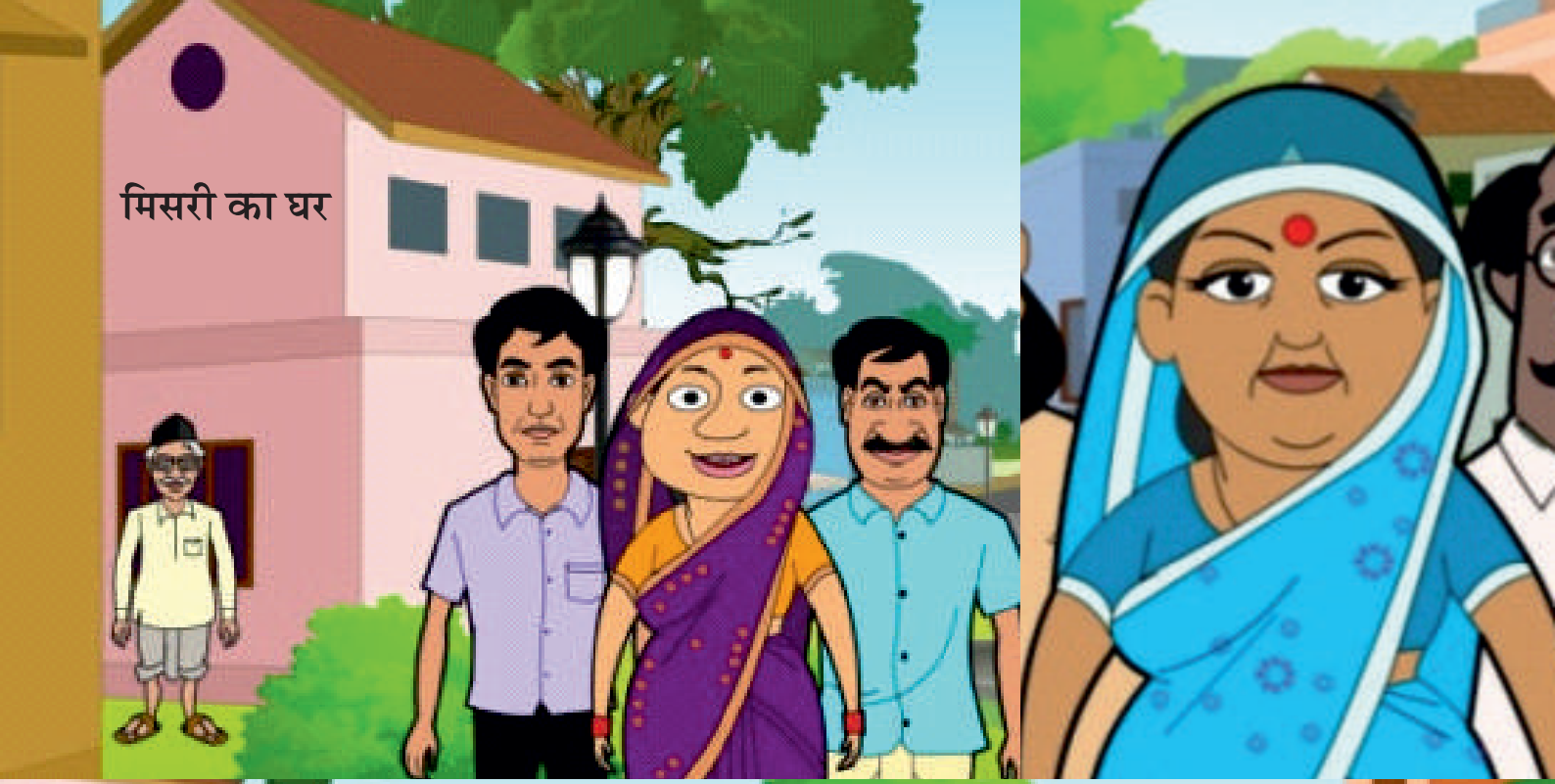

इस प्रकार कुछ ही समय में जगदीशपुर एक खुशहाल गाँव बन जाता है। और अन्य गाँवो के लिए एक प्रेरणा स्रोत गाँव बन जाता है।

समाप्त!

- तो देखा दोस्तों, आज हिन्दुस्तान में हर तरफ ऐसे कई बुधिया और जगदीशपुर गाँव हैं जहाँ पर अज्ञानता और अंधविश्वास अब भी कायम है। आज जरूरत है कि हम सभी लोग इस कहानी से कुछ सीखें और ये दृढ निश्चय करें कि हम सब भी तरक्की के मार्ग पर चलेंगे और देश को खुशहाल बनायेंगे...

- इतिहास गवाह है कि जब भी किसी ने कोई नई चीज का आविष्कार किया, तब तब उसे लोगों की आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा, चाहे वो न्यूटन हो या आइन्सटीन, चाहे वो जेम्स वॉट हो या फिर थॉमस अल्वा एडीसन... शुरु में सबने इनका मज़ाक उड़ाया और हतोत्साहित किया। लेकिन इन्होंने इसको सकारात्मक रुप से एक चुनौती की तरह से लिया और आज विश्व को ऐसी देन दी, जिससे संपूर्ण विश्व का नक्शा ही बदल गया। इसलिये हम सब को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिये, ताकि हम सब भी इनके नक्शे कदम पर चल सकें...

और दोस्तों !

- अगर आपको विरोध करना ही है तो विरोध करें अज्ञानता का, विरोध करें अंधविश्वास का, विरोध करें रुढिवादिता का, विरोध करें अन्याय का, ना कि तरक्की, विकास और खुशहाली का...

- आईये हम सब प्रण लें कि हम लोग चाहे कुछ भी हो जाये... चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ बनें... डगमगायेंगे हरगिज नहीं... किसी भी कीमत पर हम अपने देश के विकास और तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगे...

- और मैं तो अब चला ऐसे ही किसी और गाँव में, किसी और बुधिया और उसके जैसे अन्य गाँव वालों को सही राह दिखाने...

और अब आप की बारी है...

जय हिन्द।

एनपीसीआईएल
NPCIL

न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

द्वारा जनहित में जारी...

द्वारा प्रकाशित

कार्पोरेट प्लानिंग और कार्पोरेट कम्यूनिकेशन्स निदेशालय (सीपी और सीसी)

६-एस-१४, विक्रम साराभाई भवन, अनुशक्तिनगर, मुंबई - ४०० ०९४.

ई-मेल : cpcc@npcil.co.in

वेबसाईट : www.npcil.nic.in